

(पूजा नं. 1)
श्री सप्तऋषि पूजा
(समुच्चय पूजा)

—स्थापना-(अडिल्ल छंद) —

सुरमन्यु श्रीमन्यु आदि ऋषि सात हैं।
 चारण ऋद्धि समन्वित जो विख्यात हैं।।
 मथुरापुरि में चमत्कार इनका हुआ।
 रोग महामारी इन तप से भग गया।।।।।

—दोहा —

इन सातों ऋषिराज की, पूजा करें महान।
 रोग शोक की शांति हित, करें प्रथम आह्वान।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-
 विनयलालस-जयमित्रनाम-सप्तऋषिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-
 विनयलालस-जयमित्रनाम-सप्तऋषिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-
 जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम-सप्तऋषिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव
 भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

—अष्टक-शंभु छंद —

गंगा यमुना अरु सरस्वती, नदियों का जल भर लाए हैं।
 हो जन्म जरा मृत्यु का क्षय, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
 सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
 आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।।।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो जन्मजरामृत्यु-
 विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर विमिश्रित केशर घिसकर, स्वर्ण कटोरी लाए हैं।
 संसार ताप हो जाए नष्ट, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।

सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
 आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो संसारताप-
 विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल तंदुल की, थाली भर कर ले आए हैं।
 हो अक्षय पद की प्राप्ति हमें, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
 सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
 आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।3।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये
 अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा गुलाब आदिक पुष्पों का, थाल सजाकर लाए हैं।
 निज कामबाण विध्वंस हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
 सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
 आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।4।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो कामबाण-
 विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी घेवर आदिक व्यंजन का, थाल सजाकर लाए हैं।
 निज क्षुधारोग के नाश हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
 सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
 आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।5।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो क्षुधारोग-
 विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक कंचन थाली में ले, आरति करने आए हैं।
 निज मोह तिमिर के नाश हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
 सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
 आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।6।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो मोहांधकार-
 विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कपूर की धूप दहन, अग्नी में करने आए हैं।
निज अष्ट कर्म के नाश हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।7।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम्र फल आदि विविध, फल थाल सजाकर लाए हैं।
शिवपद की केवल प्राप्ति हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।8।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुअक्षत पुष्प चरु, वर दीप धूप फल लाए हैं।
“चन्दनामती” इक अर्घ्य थाल, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धीधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।9।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

कंचन झारी में भरा, यमुना सरिता नीर।
शांतीधारा हम करें, सप्तऋषी पद तीर।।10।।
शांतये शांतिधारा।

विविध पुष्प की वाटिका, से पुष्पों को लाय।
सप्तऋषी के पदनिकट, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

मंत्र जाप्य— ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसुरमन्युआदिसप्तऋषिभ्यो नमः।

जयमाला

—शेरछंद—

जय सप्तऋषी चारणादि ऋद्धि के धारी।
जय सप्तऋषी सब हुए हैं गगनविहारी।।
जय सप्तऋषी रोग शोक दुख हरे सारे।
जय सप्तऋषी सुख समृद्धि देते हैं सारे।।1।।

नौ लाख वर्ष पूर्व की सच्ची है कहानी।
इन सात सगे भाइयों की कथा पुरानी।।
जन्मे थे प्रभापुरि में श्रीनन्दन नृपति के घर।
अपने पिता के साथ सबने दीक्षा ग्रहण कर।।2।।

तप करके बहुत ऋद्धियों को प्राप्त कर लिया।
भव भोग तजके आत्मसौख्य प्राप्त कर लिया।।
तब इक नये इतिहास से संबंध जुड़ गया।
इनकी तपोशक्ती का परिज्ञान मिल गया।।3।।

दशरथ के पुत्र रामचन्द्र अवध के राजा।
लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न के सबसे बड़े भ्राता।।
इनमें से जब शत्रुघ्न बने मथुरा के राजा।
मथुरा में फैला महामारी रोग असाता।।4।।

मरने लगी जनता तो त्राहि माम् मच गया।
शत्रुघ्न का मन देख यह विचलित सा हो गया।।
कुछ पुण्य से सप्तर्षि का चौमास हो गया।
उन तप से महामारि रोग नाश हो गया।।5।।

वे वर्षायोग में भी श्रीविहार करते थे।
क्योंकी वे ऋद्धि से धरा पे पग न रखते थे।।
जिनकल्पि मुनिशुंखला में गणना है उनकी।
शिवधाम प्राप्त सिद्धप्रभु में गणना है उनकी।।6।।

मथुरा में उनके तप का चमत्कार हो गया।
हर व्यक्ति उनके आगमन से स्वस्थ हो गया।।
सातों मुनी निज आत्म में निमग्न रहते थे।
राजा प्रजा उन भक्ति में संलग्न रहते थे।।7।।

मथुरा से वे मुनी विहार करने लगे जब।
शत्रुघ्न ने उनसे विनीत वचन कहे तब।।
गुरुदेव! आप यहीं पर निवास कीजिए।
फिर से न फैले रोग आशिर्वाद दीजिए।।8।।

गुरु ने कहा घर घर में जिनालय बनाइये।
गुरुभक्ति करके सर्वसुख समृद्धि पाइए।।
उनके प्रभाव से सदा सुभिक्ष रहेगा।
जिनधर्म से हि सर्वदा दुर्भिक्ष टलेगा।।9।।

मुनि तो वहाँ से बात बताके चले गये।
शत्रुघ्न ने घर-घर में जिनालय बना दिये।।
घर-घर में सप्तऋषियों की मूर्ति बिठाई।
भक्तों ने इनकी भक्ति करके स्वस्थता पाई।।10।।

यह भक्तिसुमन थाल है जयमाल के लिए।
पूर्णार्घ्य भरा थाल है शिवधाम के लिए।।
मुझ मन वचन व तन को अब पवित्र कीजिए।
बस "चन्दनामती" मुझे भी ऋद्धि दीजिए।।11।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसुरमन्युआदिसप्तऋषिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।
इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।